

ऐश पुं. (अर.) 1. भोग-विलास, विषय-सुख 2. चैन।

ऐशगाह पुं. (अर.) केलिभवन, विलासगृह।

ऐशतलब वि. (अर.फा.) विलासी या भोग विलास का आनंद चाहने वाला।

ऐशान वि. (तत्.) 1. ईशान कोण से संबंधित, उत्तरपूर्वी 2. शिव संबंधी।

ऐशो आराम पुं. (अर.) सुख-चैन, भोग-विलास।

ऐशो इशरत स्त्री. (अर.) दे. ऐशो आराम।

ऐशोहशरत स्त्री. (अर.) भोगविलास का आनंद, खुशी, सुख।

ऐश्वरिक वि. (तत्.) 1. जिसका संबंध ईश्वर से हो 2. शिव संबंधी पुं. ईश्वर की सत्ता मानने वाला नेपाल का बौद्ध संप्रदाय।

ऐश्वर्य पुं. (तत्.) 1. विभूति 2. अणिमादि आठ सिद्धियों से प्राप्त ईश्वरीय शक्ति 3. प्रभुत्व।

ऐश्वर्यवती वि. (तत्.) जो ऐश्वर्य वाली है, ऐश्वर्यशालिनी, संपन्न।

ऐश्वर्यवान् वि. (तत्.) वैभवशाली, धन-संपन्न, ऐश्वर्यशाली, ऐश्वर्ययुक्त।

ऐश्वर्यशालिनी वि. (तत्.) ऐश्वर्यवाली।

ऐश्वर्यशाली वि. (तत्.) जो ऐश्वर्य वाला है, संपन्नता वाला।

ऐसा वि. (तद्.) इस प्रकार का, इसके समान।

ऐसिड पुं. (अं.) अम्ल, खटाई, तेजाब वि. तेज, तीक्ष्ण।

ऐसिल अव्य. (तद्.) इसी प्रकार का, ऐसे ही।

ऐसे क्रि.वि. (तद्.) इस ढंग से, इस तरह से।

ऐहलौकिक वि. (तत्.) इहलोक अर्थात् इस संसार का, सांसारिक, भौतिक, ऐहिक।

ऐहिक वि. (तत्.) दे. ऐहलौकिक।

ऐहिकता स्त्री. (तत्.) इस संसार से संबंधित भाव स्थिति, लौकिकता।

ऐहिकतापरक पुं. (तत्.) इस लोक संबंधी, ऐहलौकिक वि. जिसका संबंध सांसारिक बातों से हो।

ऐहिकदर्शी वि. (तत्.) दुनियादार, व्यवहारकुशल।

ऐहै अ.क्रि. (तद्.) आएगा, जो आने वाला हो।

ओ

ओ अव्य. (तत्.) 1. एक संबोधनसूचक शब्द 2. विस्मयादि बोधक, आश्चर्यसूचक शब्द, ओह 3. हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर जिसका उच्चारण ओष्ठ और कंठ से होता है।

ओइछना स.क्रि. (देश.) न्यौछावर करना।

ओकना अ.क्रि. (देश.) 1. कै करना 2. ऊबना 3. (मन) फिर जाना, दूर होना।

ओंकार पुं. (तत्.) 1. 'ओ' की ध्वनि या उसका उच्चारण 2. सम्मान सूचक स्वीकृति 3. मंगल 4. ब्रह्म, प्रणव।

ओंगन पुं. (देश.) गाड़ी की धुरी में दिया जाने वाला तेल या चिकनाई।

ओंगना स.क्रि. (देश.) गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना। पुं. अरंडी के बीज के फल का छिलका, अंडी के फल का तेल।

ओघना अ.क्रि. (देश.) आलस्य में झपकी लेना, अर्धनिद्रा में होना।

ओंठ पुं. (तद्.) मुँह के बाहरी उभरे हुए मांसल छोर जो दाँतों को ढके रहते हैं, ओष्ठ, होठ, लब 2. घड़े, कप आदि के मुँह का किनारा। मुहा. ओंठ उखाड़ना- परती खेत को पहले-पहल जोतना; ओंठ-काटना, ओंठ चबाना- क्रोध और दुख से ओंठ को दाँतों के नीचे दबाना।